श्री सत्य साई

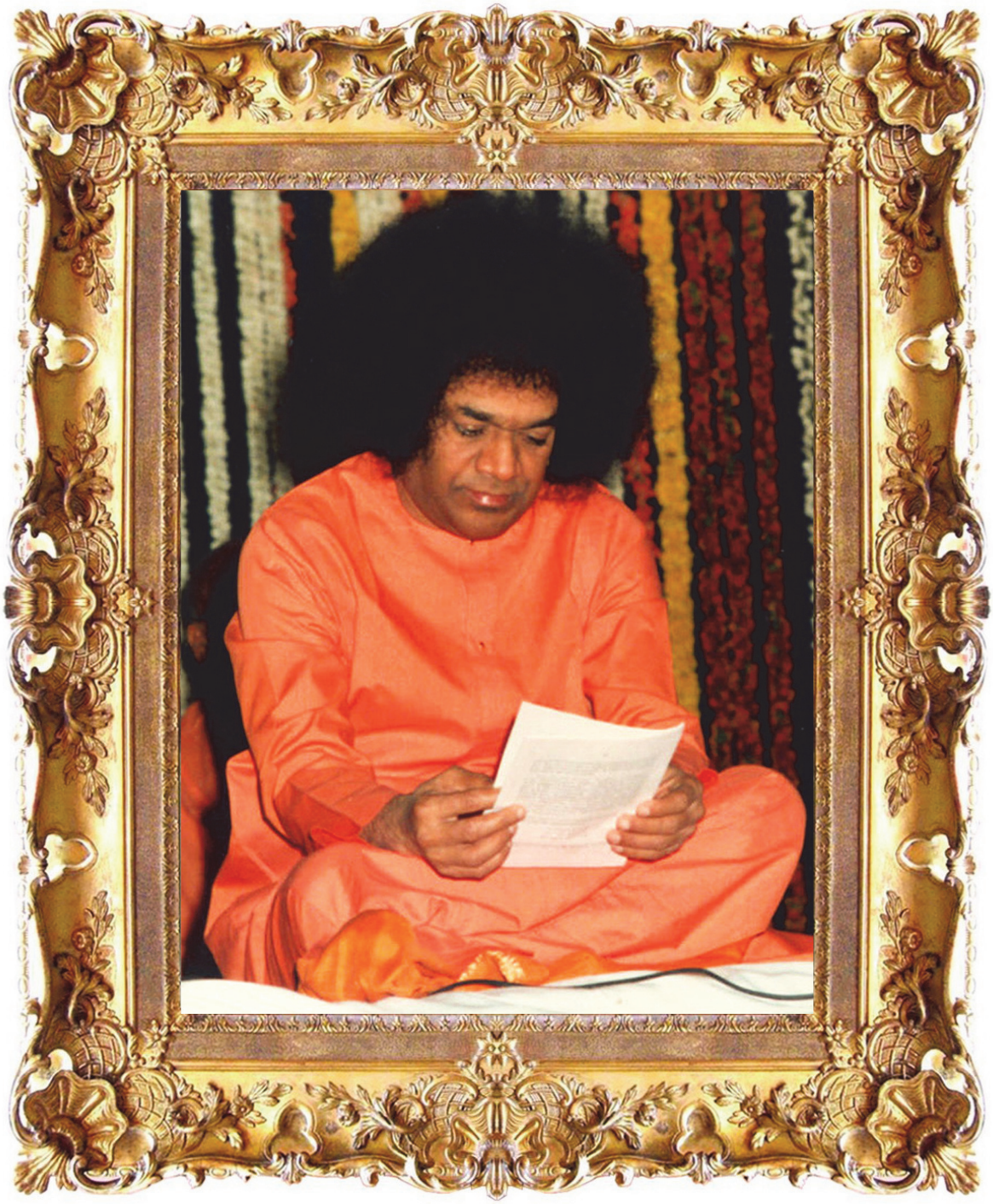

सत्य नारायण कथा

Hindi

श्री सत्य साई, सत्य नारायण कथा के लिए निर्देश

1. अपने पूजा-कक्ष में बैठिए ।
2. एक दीपक या मोमबत्ती जलाइए ।
3. एक अगरबत्ती जलायें ।
4. प्रसाद रूप में थोड़ी विभूति अथवा फल या मिठाई अपने पूजा स्थल पर रखिए ।
5. स्वयं अकेले या समूह में पूजा प्रारम्भ कीजिये ।

पूजन-विधि

1. पवित्र 'ओइम्' शब्द का तीन बार उच्चारण करिये ।
2. गणेश-प्रार्थना करें ।
3. गुरू-प्रार्थना करें ।
4. **सत्य नारायण पावन कथा** अध्याय एक से पांच तक का पाठ कीजिए ।
5. तीन बार साई-गायत्री मन्त्र का जाप कीजिए ।
6. दो अथवा तीन भजन, गणेश के भजन से प्रारम्भ करके गाइए ।
7. सर्व धर्म प्रार्थना का गान कीजिए ।
8. मंगल आरती कीजिए (भगवान श्री सत्य साई बाबा की) ।
9. 'समस्त लोका: सुखिनो भवन्तु' (तीन बार)उच्चारण कीजिए ।
10. विभूति-मन्त्र का गान करते हुए विभूति के प्रसाद का वितरण कीजिए ।

नोट - यदि आप उपरोक्त सभी निर्देशों का पालन न भी कर सकें तो कम से कम **श्री सत्य-साई, सत्य नारायण कथा** के पांच अध्यायों का पाठ अवश्य करें ।

इस कथा का पाठ पूर्णिमा या गुरूवार या प्रतिदिन कर सकते हैं ।

जो भी व्यक्ति इस कल्पलता रूपी पावन कथा का पाठ पूर्ण आस्था तथा विश्वास के साथ करता है, उस पर प्रभु के आशीर्वाद तथा अनुग्रह की वर्षा होती है तथा उसकी प्रार्थनाएँ अवश्य फलीभूत होती हैं ।

गणेश–वन्दना

वक्र–तुण्ड–महाकायः सूर्य कोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं् कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।।

हे विशाल काय और टेढ़ी सूंड वाले स्वामी!
आपका तेज करोड़ों सूर्यों के समान है ।
मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप सदा मेरे सभी सत्कर्मों में
आने वाली बाधाएँ दूर कीजिए ।

गुरू–वन्दना

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूः साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

सद्गुरू देव को नमस्कार हो –
जो कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर स्वरूप हैं ।
गुरू वास्तव में सर्वोच्च परब्रह्म है ।
अतः परम सद्गुरू को नमस्कार हो ।

प्रथम-अध्याय - अवतरण और बाल्यावस्था

भगवान श्री सत्य साई बाबा का जन्म दक्षिण-भारत के आन्ध्र-प्रदेश राज्य में स्थित पुट्टपर्ति नामक एक छोटे से गांव में हुआ था । उनके पिता का नाम श्री पेद्दा वैंकप्पा राजू और उनकी दिव्य माता का नाम ईश्वरम्मा था ।

माता ईश्वरम्मा एक परम पवित्र और धार्मिक महिला थी । वह हमेशा ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए कोई न कोई व्रत या अनुष्ठान करती रहती थी । उनकी इस भगवद्-भक्ति तथा प्रेम से प्रसन्न होकर भगवान नारायण ने फिर एक बार पृथ्वी पर जन्म लेकर दिव्यता को प्रकाशित करने हेतु दैवीय नाटक खेलने का निश्चय किया । तभी तो उन्होंने ईश्वरम्मा को अपनी माता और पेद्दा-वैंकप्पा राजू को अपना पिता चुना ।

भगवान बाबा का जन्म साधारण मनुष्य की भाँति नहीं हुआ था । माता ईश्वरम्मा के गर्भ में शिशु का अवतरण एक दैवीय घटना थी । स्वयं माता ईश्वराम्मा ने इस बात की पुष्टि की है । उन्होंने बताया कि एक बार जब वह कुंए से पानी भरने गईं, तब उन्होंने देखा कि एक नीले रंग की चमकदार रोशनी, आकाश से नीचे उतरी तथा उनके शरीर में प्रवेश कर गई । फलस्वरूप वह बेहोश होकर नीचे गिर गई । ईश्वरम्मा की सास ने पहले ही चेताया था कि यदि उसके साथ कुछ अप्रत्याशित घटित होता है, तो वह घबराएं नहीं वरन उसे ईश्वर की इच्छा समझें । इस बात का पता किसी को भी नहीं चला । इस रहस्य का उद्घाटन तो माता ईश्वरम्मा ने महासमाधि लेने से कुछ दिन पूर्व ही किया था, जब स्वयं भगवान ने उनसे अपना कुंए वाला अनुभव लोगों को सुनाने के लिए कहा ।

अब शिशु गर्भ में जैसे-जैसे बड़ा हो रहा था और प्रसव का समय धीरे-धीरे निकट आता जा रहा था, तभी से घर में कुछ न कुछ अदभुत घटनाएं घटित होने लगी थीं । रात्रि के समय जब सब सो रहे होते, तो घर में रखे हुए वाद्य-यन्त्र सहसा स्वत: ही बज उठते । घर में रखी हुई वीणा के तार जैसे किसी अदृश्य हाथों द्वारा छेड़े जा रहे हों या मृदंगम कोई बजा रहा हो । कहीं घंटियों के बजने की मधुर ध्वनि सुनाई देती । संगीत की मधुर स्वर लहरी जैसे किसी देवलोक से आ रही हो । सारा घर संगीत की मधुर-ध्वनि से तरंगित हो उठता । घर के सभी सदस्य निद्रा से जाग उठते । घर एक अद्भुत सुगन्ध से भर जाता ।

अन्तत: वह शुभ दिन आया जो कार्तिक मास का सोमवार, भगवान शिव की पूजा का विशिष्ट दिन था और तारीख थी तेईस नवम्बर सन् उन्नीस सौ छब्बीस (1926)। इस वर्ष का नाम था 'अक्षय' और उस समय का नक्षत्र था 'आर्द्रा' । माता ईश्वरम्मा की सास ने तभी सत्यनारायण की पूजा-अर्चना समाप्त करके ईश्वर को प्रसाद अपनी पुत्र-वधू को दिया था ।

जैसे ही माता ने प्रसाद ग्रहण किया, उसके थोडी देर पश्चात् ही **भगवान साई–नारायण** ने जन्म लिया । बालक का सौन्दर्य देखते ही बनता था । बालक को नाम दिया गया – **"सत्य नारायण"** ।

एक दिन की घटना है । बालक 'सत्य' पालने में सोया हुआ था । तभी पास खड़ी महिलाओं ने देखा कि बालक के नीचे कुछ हलचल सी हो रही है । अब जैसे ही उन्होंने शिशु को गोदी में उठाया तो उनके आश्यर्च का ठिकाना न रहा । उन्होंने एक नाग को वहाँ से जाते हुए देखा, जहाँ शिशु सोया हुआ था । वह नाग कुछ गज की दूरी पर जाकर अचानक अदृश्य हो गया । ऐसा प्रतीत होता था मानो भगवान आदिशेष वैकुण्ठ में अपने स्वामी को न पाकर उनका सान्निध्य पाने के लिए स्वयं पृथ्वी पर उतर आयें हों ।

बालक 'सत्य–नारायण' ने न तो कभी सामिष आहार को छुआ और न कभी उन घरों का ही दर्शन किया जहाँ ऐसा आहार बनाया जाता था । पड़ोस में ही वहाँ एक करनम्–सुबम्मा नाम की सात्विक महिला रहती थी । बालक सत्य उसे बहुत प्रिय था । बालक सत्य का भी अधिकतम समय सुबम्मा के घर पर ही व्यतीत होता । इस अवतार के लिए भी तो एक यशोदा को होना अनिवार्य था ।

बालक सत्य में एक और भी विशेष आदत थी । जो भी याचक उनके द्वार पर आता वह कभी भी खाली हाथ न लौटता । वे स्वयं इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि भूखे को भरपेट भोजन मिले । कभी–कभी तो वे स्वयं अपना भोजन भी उठाकर भिखारियों को दे देते थे । उनकी मां और बहन भी कभी–कभी इस दानशीलता से परेशान हो जातीं थीं । बाद में जब वे सत्य को भोजन के लिए बुलातीं तो वे कह देते कि उन्होंने भोजन कर लिया है । विश्वास दिलाने के लिए अपने नन्हे–नन्हे कोमल हाथों को सूँघने के लिए आगे कर देते । उनके दैवीय कोमल हाथों से सचमुच सुस्वादु भोजन की सुगन्ध आ रही होती थी । यह पूछने पर कि उन्होंने भोजन कहां किया? सत्य का उत्तर होता था, "एक वृद्ध व्यक्ति ने मुझे खिलाया ।"

यद्यपि 'सत्य' अभी बालक ही थे, परन्तु उसका वास्तविक स्वभाव तो प्रेम ही है । इस बात को उजागर होने में अधिक देर नहीं लगी । बालक 'सत्य' अपने साथियों को कभी भी दु:खी नहीं देख सकते थे । उनको खुश करने के लिए वे अक्सर शून्य में अपना हाथ घुमाकर टॉफी, पेन्सिल, मिश्री , कॉपी, रबर आदि वस्तुएं निकालकर उन्हें देते रहते थे । वह सभी छोटे–छोटे बच्चों को एकत्रित करते और गुड़ियों का घर बनाते । उस घर में भगवान की छोटी–छोटी फोटो लगाते और सभी बच्चों को भजन सिखाते ।

प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर लेने के उपरान्त बालक सत्य को आगे की शिक्षा के लिए पास के ही गाँव, बुक्कापट्नम् में दाखिल करा दिया । वहाँ भी सत्य शीघ्र ही अपने सहपाठियों में अत्यन्त लोकप्रिय हो गये ।

उनके एक शिक्षक थे श्री मेहबूबखान जो सत्य से बहुत स्नेह करते थे । एक बार की बात है कि एक शिक्षक ने सत्य को बैंच पर खड़े होने की सजा दे दी । बालक की भूल केवल इतनी थी कि वह शिक्षक द्वारा लिखाये जाने वाले नोट्स नहीं लिख रहा था । जबकि सभी बच्चे बड़े मनोयोग से लिख रहे थे । इससे शिक्षक के अहं को चोट पहुँची जिसके फलस्वरूप उसने सत्य को उपरोक्त सज़ा दी । घंटी बज चुकी थी और उनके पढ़ाने की समय सीमा भी समाप्त हो चुकी थी । वह शिक्षक अपनी कुर्सी से उठ ही न सके । सत्य अभी भी बैंच पर ही खड़े थे । अगले शिक्षक श्री मेहबूबख़ान ने कक्षा में प्रवेश किया ।

ख़ान साहेब अब अपने सहयोगी के पास गये और उन्हें कुर्सी खाली करने के लिए कहा । बेचारे शिक्षक जो पहले ही बहुत शर्मिंदा थे, अब तो लगभग रूँआसे से होकर बाले, "साहेब! मैं क्या करूँ? यह कुर्सी ही मुझे नहीं छोड़ रही है ।" ख़ान ने कक्षा में चारों ओर देखा क्योंकि बच्चों ने दोनों शिक्षको की आपसी बातचीत सुन ली थी और वे मुँह छिपा कर हँस रहे थे । ख़ान ने देखा कि सत्य को बैंच पर खड़ा किया हुआ है और वह शान्त भाव से सारे नाटक का आन्नद ले रहे थे । उन्होंने तुरन्त भाँप लिया कि आखिर हुआ क्या है । ख़ान साहेब एकदम हतप्रभ रहे गये । उन्होंने शिक्षक से कहा कि वह तुरन्त सत्य को नीचे उतरने के लिए कहें, तभी वह कुर्सी से उठ सकेंगे । शिक्षक जो पहले ही काफी अपमानित और शर्मिन्दा सा महसूस कर रहे थे, सत्य से नीचे उतरने के लिए निवेदन करने लगे । जैसे ही सत्य नीचे उतरे, कुर्सी भी तत्काल शिक्षक से अलग हो गई । इस तरह से बालक की दिव्यता शनैः शनैः प्रकट होने लगी ।

एक बार एक तांगे वाले का घोड़ा खो गया । उसने सब जगह बहुत खोजा परन्तु कहीं नहीं मिला । उसे किसी ने बताया कि पास के ही गांव में एक दिव्य बालक रहता है, वहीं तुम्हें घोड़े के विषय में कुछ बता सकता है । बिल्कुल वैसे ही जैसे शिरडी वाले अवतार में हुआ था, बालक ने तांगेवाले को प्यार से बुलाया और बताया कि उसका घोड़ा गांव के बाहर ही एक आम के बाग में घास चर रहा है । तांगे वाले की खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने वैसा ही पाया जैसा बालक ने बताया था । उस दिन के बाद से तो सभी तांगे वाले बालक सत्य से अपने तांगे में बैठने की विनती करते, जिससे उनका अनुग्रह उन्हें प्राप्त हो सके और उनका धन्धा अच्छा चले ।

श्री सत्य साई सत्य नारायण कथा का प्रथम अध्याय सम्पूर्ण ।
सर्वत्र मंगलं भवतु । सर्वत्र शान्तिर्भवतु ।
ऊँ श्री सत्य साइने नमः ।।

द्वितीय-अध्याय - साई बाबा के मिशन का प्रारम्भ

आठ मार्च सन् उन्नीस सौ चालीस (1940) को संध्या समय बालक सत्य के मुख से एक हृदय-विदारक चीख निकली और वे अचेत होकर पृथ्वी पर गिर गये । उन्होंने अपने दांये पैर का अंगूठा पकड़ा हुआ था । घर में उपस्थित सभी लोगों ने सोचा कि बिच्छू ने काट लिया है । परन्तु वास्तव में तो सत्य अपने किसी भक्त की रक्षा के लिए अपने शरीर को छोड़कर कहीं चले गये थे । उस समय तक सत्य ने पहले कभी सबके सामने ऐसा नहीं किया था । अत: लोगों को इस बात की बिल्कुल जानकारी नहीं थी । सभी लोग बिच्छू की तलाश में जुट गये परन्तु वहाँ तो कोई भी बिच्छू दिखायी नहीं दिया । भला दिखता भी कैसे? क्योंकि बालक की इस अवस्था का कारण तो कुछ और ही था ।

कुछ समय के बाद सत्य ने अपनी आँखें खोलीं । परन्तु वे ऐसे ही शान्त थे जैसे कुछ हुआ ही न हो । दूसरे दिन वह फिर अचेत हो गये । बाद में जब उन्होंने आँखे खोलीं तो लोगों को बताया कि ग्राम देवी "मुत्यालम्मा" नाराज हैं । अत: आप में से कोई जाकर नारियल चढ़ाये और कपूर से उनकी आरती करे ।

जब देवी के समक्ष नारियल फोड़ा गया तो यहाँ घर में उपस्थित लोगों को सत्य ने बताया कि नारियल तीन भागों में टूटा है जो कि ऐसे ही हुआ था । अब कुछ लोग सोचने लगे कि सत्य के ऊपर किसी प्रेत की छाया है । उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों और दवाइयों से उनका उपचार करना शुरू कर दिया । कुछ ने कहा कि सत्य पागल है और उन्होने उनके माता-पिता को बुला लिया ।

सत्य के माता-पिता आये और जब अपने प्रिय पुत्र की यह दशा देखी तो उन्हें बहुत दु:ख हुआ । वे भी नहीं जानते थे कि क्या किया जाये । अत: वे सत्य को ओझा के पास ले गये । उस तान्त्रिक का भूत-भगाने का तरीका कुछ ज्यादा ही कष्टकारी था । उसने एक तेज धार-दार चाकू से सत्य के सिर की कोमल तवचा को बड़ी निर्दयता से काट दिया तथा उस पर नीबू निचोड़ दिया और कोई तीखा दुर्गन्धपूर्ण पाउडर छिड़क दिया । फलस्वरूप सत्य का सुकोमल चेहरा अत्यधिक सूज गया । आँखे भी सूजकर मोटी-मोटी हो गईं । सत्य की ऐसी हालत देखकर उसकी माता और बहन दोनों बहुत दु:खी हुईं । परन्तु वे विवश थीं क्योंकि उन्होंने ही तो 'सत्य' की ठीक करने के लिए तान्त्रिक को सौंपा हुआ था ।

उनको दु:खी देखकर सत्य ने अपनी बहन को इशारे से बुलाकर कहा कि यहीं पास में ही एक जड़ी-बूटी हैं । उसको तोड़कर, उसका अर्क निकालकर वह उनकी आँखों पर लगा दें ।

सत्य की माता और बहन ने उस तान्त्रिक से सत्य को छोड़ देने की प्रार्थना की और उन्होंने तान्त्रिक से कहा कि जैसे ही सत्य कुछ ठीक हो जायेगा उसे वह दोबारा उसके पास ले आयेंगी । उस तान्त्रिक ने अनमने भाव से 'सत्य' को छोड़ा । सत्य के कथनानुसार ही उस जड़ी-बूटी के अर्क की कुछ बूंदे उनकी आँखों में डालीं । शीध्र ही सत्य की आँखें स्वस्थ हो गईं और पहले जैसे ही शरारत से चमकने लगी ।

समय बीतता गया । अब सत्य ग्रामीणों को वैदिक-दर्शन की उत्कृष्टता का यशोगान कराते । अब उन्होने साई-बाबा नामक एक संत के बारे में बाते करना प्रारम्भ कर दिया था । अब तो सत्य के पिता से न रहा गया । एक दिन उन्होंने रोष में आकर एक छड़ी उठाई और सत्य को सबक सिखाने और उनका भूत उतारने के इरादे से उनके पास पहँचे । उन्होने सत्य से पूछा, "तुम कौन हो? सच-सच बताओ" । सत्य जो बहुत शान्त थे, उन्होंने बड़े प्रेम और अधिकार पूर्ण ढंग से कहा, "मैं साई बाबा हूँ । अपने घरों को स्वच्छ रखो और मन को शुद्ध रखो । मैं उसमें सदा-सदा के लिए निवास करूंगा ।"

यह सुनते ही सत्य की पिता पेद्दा वैंकप्पा राजू के हाथ से छड़ी गिर गई और व हतप्रभ से रह गये । फिर उन्होंने कहा, "यदि तुम सच में साई-बाबा हो तो हमें इस बात का प्रमाण दो ।" सत्य ने अंजुली भरकर चमेली के फूल लिए और उन्हें धरती पर गिरा दिया । फूलों ने गिरते ही ज़मीन पर तेलुगु भाषा में "साई-बाबा" का शाब्दिक रूप धारण कर लिया । उसके बाद से न केवल उनके गांव के लोग बल्कि आस-पास के गांव के लोग भी उन्हें साई-बाबा के नाम से पुकारने लगे और बड़े भक्ति-भाव से उनकी पूजा करने लगे । प्रत्येक बृहस्पतिवार को तो विशेष पूजा-अर्चना की जाने लगी ।

श्री सत्य साई सत्य नारायण कथा का दूसरा अध्याय सम्पूर्ण ।
सर्वत्र मंगलं भवतु । सर्वत्र शान्तिर्भवतु ।
ऊँ श्री सत्य साइने नम: ।।

तृतीय-अध्याय - साई बाबा की दिव्य लीलाएं

जैसे-जैसे सत्य बड़े हो रहे थे, गांव के लोगों का ध्यान अब उनके अन्दर छिपी हुई दिव्य शक्तियों की ओर जाने लगा । अब वे बालक सत्य को बड़ी श्रद्धा और सम्मान के साथ "स्वामी" कहकर सम्बोधित करते ।

एक बार की बात है, स्वामी अपने परिवार के सदस्यों के साथ श्री विरूपाक्ष मन्दिर के दर्शन के लिए हम्पी नगर गये ।जब वे मन्दिर के पास पँहुचे तो स्वामी अन्य सदस्यों के साथ मन्दिर के अन्दर नहीं गये बल्कि मन्दिर के द्वार के निकट बाहर ही खड़े रहे । जब गर्भगृह में पूजा आरम्भ हुई तो 'सत्य' को शिवलिंग के स्थान पर खड़े देखकर सबको बड़ा अचम्भा हुआ । वे तो उन्हे अभी अभी द्वार पर ही छोड़कर आये थे । वह अचानक गर्भगृह के अन्दर कैसे पहुँच गये? वे देखने के लिए मन्दिर के बाहर की ओर भागे तो स्वामी को बाहर ही खड़े हुए पाया । वे अकेले ही बाहर खड़े हुए आकाश की ओर निहार रहे थे । उनके गुलाबी अधरों पर मासूमियत भरी मुस्कान थी ।सब के सब आश्चर्य चकित होकर स्वामी के चरणों में गिर पड़े ।

एक दिन स्वामी स्कूल से लौटे और अपनी किताबों का थैला एक तरफ फैंक दिया । ऊँची आवाज़ में उन्होंने घोषणा की-"माया जा चुकी है । अब मैं केवल तुम्हारा ही नहीं हूँ । मेरे भक्त मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।"

स्वामी जी की भाभी अर्थात उनके भाई श्री शेषम राजू की पत्नी, आवाज सुनकर बाहर की ओर भागी । उसने स्वामी के मुखमंडल के चारों ओर एक विचित्र प्रकाश-पुंज देखा । वह प्रकाश पुंज इतना चमकदार था कि उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली ।

स्वामी की माता ने उनसे प्रार्थना की, "ओ बेटा! यदि तुम हमें छोड़कर अपने भक्तों के पास जाना ही चाहते हो तो यहाँ पुट्टपर्ति में ही रहो । यहीं रहकर अपने सभी बच्चों की रक्षा करो और अपना अनुग्रह उनपर बनाये रखो ।" गरिमामय ढंग से स्वामी ने अपनी माता की यह विनम्र प्रार्थना स्वीकार कर ली ।

काफी समय तक स्वामी कर्नम्-सुबम्मा के घर पर ही रहे क्योंकि उनका घर इतना बड़ा था कि स्वामी के दर्शनों के लिए आने वाले भक्तों की बढ़ती हुई संख्या वहीं समा सकती थी । इसके अतिरिक्त सुबम्मा स्वयं भी एक अनन्य भक्त थी और स्वामी को हृदय से प्रेम करती थी । सभी जगहों से भक्त आने शुरू हो गये थे । कभी कभी सभी उपस्थित लोगों को खिलाने के लिए भोजन अपर्याप्त हो जाता था । ऐसे समय पर सुबम्मा स्वामी से मदद करने की प्रार्थना करती । स्वामी दो नारियल लेकर रसोई में जाते और दोनों को आपस में टकराकर तोड़ देते । नारियल पानी को भोजन पर छिड़क देते । अब स्वतः ही भोजन न केवल मौजूद लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त होता, बल्कि बच भी जाता ।

अब जैसे-जैसे भक्तों की भीड़ बढ़ती जा रही थी, उन्होंने सुबम्मा के घर के समीप पर भजन हाल बनाने की इच्छा व्यक्त की । एक बार की बात है जब स्वामी सुबम्मा के घर पर ही ठहरे हुए थे, लक्ष्मैया नाम का पुजारी अपने किसी मित्र के साथ वहाँ आया । उसके मित्र की पत्नी भी साथ थी, जो कि मानसिक रूप से बीमार थी । पुजारी ने अपने मित्र को उसकी पत्नी सहित चित्रावती नदी के किनारे पर ही प्रतीक्षा करने लिए कहा ।

पुजारी सुबम्मा के घर पहुँचा ओर स्वामी से उसकी भेंट हो गई । यह न जानते हुए कि वह किससे मिल रहा है, पुजारी ने स्वामी से पूछा, "मेरा मानना है कि यहाँ कोई लड़का है जो रोगियों को ठीक करता है । कुपया क्या आप मुझे उस तक ले चलेंगे? क्योंकि मेरे साथ मेरा एक मित्र है ओर उसकी पागल पत्नी है ।"

स्वामी ने कहा कि वह अपने मित्र दम्पति को उनके पास ही ले आये । उन्होंने उन्हें स्नान करके अन्य भक्तों के साथ ही बैठने को कहा । स्वामी ने फिर सबको प्रसाद दिया । स्वामी ने दिव्य विभूति सृजित की और उस पागल महिला के मुख में डाली ।

बाद में, स्वामी ने वही फल काटकर उन्हें खाने के लिए दिए जो वे स्वामी को अर्पण करने के लिए लाये थे । वह पागल महिला तत्काल ही स्वस्थ हो गई । सभी लोग जो वहाँ उपस्थित थे, आश्चर्य से इस घटना को देख रहे थे । फिर वह दम्पति तथा पुजारी स्वामी को आदर और श्रद्धा से नमन करके खुशी- खुशी अपने घर चले गये ।

अब जैसे-जैसे कर्णम सुबम्मा के जीवन का अन्तिम समय निकट आ रहा था, स्वामी ने उनसे खूब दान करवाया । एक बार स्वामी जब बैंगलोर चल गये, सुबम्मा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा । लेकिन उनका मन लगातार अपने प्यारे स्वामी में ही लगा रहा । यहाँ तक कि उनका मुख जो लगातार स्वामी का पवित्र नाम जप रहा था, हिलना बन्द हो गया । उसकी श्वांस भी थम गई । उसकी आखिरी श्वांस स्वामी के नाम के साथ ही बन्द हो गई ।

उसी समय पता नहीं कहाँ से स्वामी उसकी शैया के पास ही प्रकट हो गये । उन्होंने अपनी प्रेममयी आवाज़ में पुकारा, "सुबम्मा! सुबम्मा! अपना मुंह खोलो ।" सुबम्मा ने, जो कि शारीरिक रूप से मृतप्राय थी, अपना मुहँ खोला और स्वामी के चरण छूने के लिए अपने कंपकंपाते हाथों को आगे बढ़ा दिया ।

स्वामी ने उसके हाथों को कृपा सहित अपने हाथों में ले लिया और दाहिने हाथ से गंगाजल उसके मुख में डाल दिया । उसकी प्यासी आत्मा जैसे तृप्त हो गई हो । सुबम्मा की खुली आँखें स्वामी के मुख कमल को निहार रही थी । उसकी आत्मा पार्थिव शरीर को छोड़कर स्वामी में समा चुकी थी ।

स्वामी स्वयं कहते हैं कि भक्त की इच्छानुसार वे वही स्वरूप धारण करते हैं, जैसा भक्त चाहता है । वह कभी गणपति, तो कभी मुरूगन, कुछ को श्री राम या श्री कृष्ण और यहाँ तक कि दूसरों को क्राइस्ट के रूप में भी दर्शन देकर प्रसन्न करते हैं ।

एक बार एक वकील, जिसका नाम था कृष्णामचारी, पेनुकोण्डा से पुट्टापर्ति आया । उसका एकमात्र उद्देश्य स्वामी के पाखण्ड का भण्डाफोड़ करना था । स्वामी के पिता उसे स्वामी के पास ले गए । स्वामी उस वकील को एक कमरे में ले गये और आँखे बन्द करने को कहा । जब वे कमरे में प्रविष्ट हुए तो स्वामी ने वकील से आँखें खोलने के लिए कहा । वकील ने जब आँखें खोली तो वह वहाँ फूलों की माला से ढकी हुई शिरडी-साई बाबा की समाधि को देखकर दंग रह गया । समाधि के निकट ही एक पुजारी हाथ में पूजा-सामग्री लिए हुए खड़ा था ।

स्वामी ने वकील से दूसरी तरफ देखने को कहा । वहाँ उसने हनुमान-मन्दिर, नीम वृक्ष, गुरू-स्थान और पवित्र शिरडी के अन्य दृश्य देखे । वकील शिरडी-साई बाबा का अनन्य भक्त था । जब उसने शिरडी-साई बाबा की समाधि के दर्शन पाए तो वह स्वामी के चरण-कमलों में गिरकर माफी मांगने लगा । दया-मूर्ति साई ने उसकी पीठ थपथपाई और तुरन्त ही उसे माफ़ कर दिया ।

स्वामी तो सर्वशक्तिमान हैं । जो भी उन्हें प्रेम से जिस भी नाम से पुकारता है, उसी नाम से उत्तर देते हैं और आर्शीवाद देते हैं ।

श्री सत्य साई सत्य नारायण कथा का तृतीय अध्याय सम्पूर्ण ।
सर्वत्र मंगलं भवतु । सर्वत्र शान्तिर्भवतु ।
ॐ श्री सत्य साइने नमः ।।

चतुर्थ-अध्याय - भक्त-संरक्षक

श्रीमति सकम्मा के कॉफी के बहुत बड़े-बड़े बाग़ान थे । वह एक अत्यन्त सात्विक व धार्मिक महिला थी जो हमेशा दान-धर्म करती रहती थी जैसे भूखों को भोजन कराना और गरीबों को वस्त्र दान करना इत्यादि । उसके इन्हीं सद्गुणों को देखकर मैसूर के महाराजा ने उसे 'धर्म-परायणी' की उपाधि से विभूषित किया ।

एक सुबह, लगभग नौ बजे, जब वह अपनी पूजा के कार्यक्रम में व्यस्त थी, तभी उनके नौकर ने आकर यह सूचना दी कि कुछ लोग बाहर गाड़ी में आये हैं और उनसे तुरन्त मिलना चाहते हैं । सकम्मा बाहर आई और उसने देखा कि एक पुरानी सी कार बाहर खड़ी हुई है । उस पर एक बोर्ड लगा हुआ था जिस पर लिखा था, "कैलाश-कमेटी"। सामने एक सोलह साल का युवक बैठा था, जिसके बाल बिखरे हुए से थे । उसके पीछे एक वृद्ध व्यक्ति हिरन की खाल पर बड़ी शान से बैठा हुआ था । उसकी लम्बी दाढ़ी थी और शरीर तथा माथे पर पवित्र विभूति लगी हुई थी ।

सकम्मा ने उस वृद्ध व्यक्ति का स्वागत किया और बड़ी श्रद्धा से उसकी पूजा की । उसके चरण धोये और फूल-फल अर्पण किये । उस वृद्ध व्यक्ति ने उससे कहा कि वह एक हज़ार रूपये देकर "कैलाश-कमेटी" की सदस्या बन जाये । उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से रूपये दे दिये । परन्तु रूपये और रसीद दोनों ही उसने सकम्मा को यह कहकर लौटा दी कि वह दोबारा आयेगा । कुछ वर्ष बीत गये, परन्तु कैलाश कमेटी का कहीं कोई नामोनिशन ही नहीं था ।

एक दिन सकम्मा को बैंगलौर जाना पड़ा । वह जब अपनी किसी सहेली से मिलने उसके घर गई, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा । उसने वहाँ उसी बिखरे बालों वाले लड़के को देखा । उसने जब उस लड़के की ओर देखा तो वह लड़का एक वृद्ध व्यक्ति में बदल गया और थोड़ी ही देर में पुनः युवक के रूप में आ गया । सकम्मा स्तब्ध रह गई ।

वह उस लड़के के पास गई और पूछा, "क्या तुम वही नहीं हो, जो कैलाश कमेटी के रूप में मेरे घर आये थे । लड़के ने उत्तर दिया, "बहुत साल पहले तुम्हें एक हजार रूपये देने थे, जो तुमने नहीं दिये; वही लेने मैं तुम्हारे पास आया था ।" सकम्मा की आँखों में आँसू भर आये । वह स्वामी के समक्ष नत-मस्तक हो गई और उनसे उनकी कृपा प्राप्त की ।

एक दिन अपराह्न के समय स्वामी अपनी शैया पर लेटे हुए अपने भक्तो से वार्ता कर रहे थे । अचानक वे चिल्लाये, "गोली मत चलाओ । गोली मत चलाओ!" फिर वे अचेत हो गये । लगभग एक घंटे के बाद वे उठे और भक्त को एक टेलीग्राम करने के लिए कहा । जिसमें लिखना था-"तुम्हारा रिवाल्वर मेरे पास है । चिन्ता मत करो"

किसी ने कहा, "स्वामी! रिवाल्वर शब्द का प्रयोग उचित नहीं होगा क्योंकि इसमें डाक विभाग के अधिकारियों को आपत्ति हो सकती है ।" इसलिए रिवाल्वर की जगह "यन्त्र" लिखा गया और टेलिग्राम भेज दिया गया । सभी को जिज्ञासा हो रही थी । इसलिए उन्होंने बाबा से इस अचानक हुई घटना के बारे में पूछा । स्वामी ने कहा, "तुम शीध्र ही जान जाओगे ।"

चार दिन बाद-भोपाल से एक पत्र आया जो किसी सेना के अधिकारी द्वारा लिखा गया था । परिस्थियों के कारण अधिकारी बहुत परेशान था, इसलिए उसने स्वयं को गोली मारने का निर्णय किया । उसने परीक्षण के लिए हवा में गोली चलाई । उसी क्षण भारत के दूसरे छोर पर बैठे स्वामी चिल्लाये, "गोली मत चलाओं! गोली मत चलाओ ।"

उधर उसी समय अधिकारी के दरवाजे पर दस्तक हुई । अधिकारी ने अपनी रिवाल्वर को छिपाया और आकर दरवाजा खोला । उसका एक पुराना सहपाठी अपनी पत्नी और नौकर के साथ उससे मिलने आया था । उसने उन्हें अन्दर आने के लिए कहा । कुछ समय बात-चीत करने के उपरान्त उन्होंने उसके पड़ौसी से मिलने जाने की अनुमति मांगी क्योंकि वह भी उनका मित्र था और वे लोग चले गये ।

उनके जाने के पश्चात् पुनः वह अधिकारी अब अपनी रिवाल्वर के पास पहुँचा परन्तु रिवाल्वर नहीं मिला । एक बार फिर दरवाजे पर दस्तक हुई । उसने दरवाजा खोला तो सामने डाकिया खड़ा था । उसने एक टैलीग्राम पकड़ाया जिसपर लिखा था-"तुम्हारा यन्त्र मेरे पास है । चिन्ता मत करो ।" भेजने वाले - "बाबा" ।

हमारे स्वामी परम् दयालु हैं । जो भी उनकी भक्ति-भाव से पूजा करता है, उसको न तो कभी वे निराश करते हैं और न ही उसका साथ छोड़ते हैं । उन्हें बस प्रेम से पुकारो, वे सत्य, धर्म, शान्ति और प्रेम रूपी चारों हाथों से मदद के लिए दौड़े चले आते हैं । उनकी महिमा अपरम्पार है, अवर्णनीय है । उपरोक्त घटना में अधिकारी की पत्नी 'बाबा' की अनन्य भक्त थी ।

श्री सत्य साई सत्य नारायण कथा का चतुर्थ अध्याय सम्पूर्ण ।
सर्वत्र मंगलं भवतु । सर्वत्र शान्तिर्भवतु ।
ॐ श्री सत्य साइने नमः ।।

पाँचवा-अध्याय - सर्वदा दयालु साई

एक बार की बात है, स्वामी किसी के घर बैंगलौर गये थे । वहाँ उनके दर्शनों के लिए काफी भीड़ एकत्रित हो गई । कुछ लोग स्वामी को अर्पण करने के लिए फूल और फल लेकर आ रहे थे । दूसरे कुछ लोग स्वामी के चमत्कारों की और उनकी कृपा की चर्चा कर रहे थे ।

बेचारे एक मोची ने भी उनकी सब बातें सुनीं । अचानक उसके दिमाग में भी एक सुन्दर सा विचार आया । उसके मन में भी अवतार की एक झलक पाने की लालसा जागी । उसने बगीचे में से एक गुलाब का फूल तोड़ा और भीड़ में घुसकर, किसी तरह उधर आगे बढ़ता चला गया जिधर स्वामी बैठे थे । उसने अन्दर की ओर झांका । उसी समय स्वामी ने भी बाहर की ओर झांका । दोनों के नयन मिले और मोची के हृदय में स्वामी के लिए अगाध प्रेम उमड़ पड़ा ।

स्वामी ने प्यार से उसे अपने पास बुलाया । मोची स्वामी के निकट गया और गुलाब का फूल भेंट किया । स्वामी ने उससे गुलाब का फूल ले लिया । स्वामी ने मोची से उसकी मातृभाषा-तमिल में ही पूछा, "मेरे प्रिय! तुम क्या चाहते हो?" मोची इस प्रश्न के लिए तैयार न था । अनायास ही उसके मुँह से निकल गया, " स्वामी! कुपया मेरी झोंपड़ी में दर्शन दीजिए ।" स्वामी ने कहा, "निश्चय ही, मैं अवश्य आउंगा ।"

मोची की आँखों से खुशी के आंसू बहने लगे । वह श्रद्धा से स्वामी के चरणों में गिर पड़ा । अपनी उद्विग्नता में वह यह तो पूछना ही भूल गया कि वे कब उसकी कुटिया में आयेंगे । स्वामी के वहां से जाने के बाद ऐसे प्रश्न मोची के दिमाग में घूमने लगे । दिन बीतते गये परन्तु मोची की कुटिया में भगवान के दर्शन देने का कोई संकेत भी नजर नहीं आ रहा था ।

एक दिन जब मोची फटी-टूटी चप्पलें सिल रहा था, उसके सामने ही सड़क के किनारे पर एक कार आकर रूकी । मोची ने सोचा कि यह पुलिस की कार होगी । जल्दी से उसने अपना सामान समेटा और डर के मारे भागने को उद्यत हुआ । उसने सोचा कि पुलिस वाले उसे वहाँ से भगाने के लिए ही आये होंगे । तभी स्वामी कार से बाहर आये और मोची से कहा, "डरो मत"। बल्कि उन्होंने उसे अपनी कार में बैठाया और कार आगे बढ़ चली । मोची तो एक दम अवाक् था । उसके मुख से शब्द ही नहीं फूट रहे थे । वह निःशब्द ठगा सा बैठा रहा । स्वामी ने ड्राईवर को मोची के घर का रास्ता बताया और कार ठीक उसकी कुटिया के सामने आकर रूकी ।

मोची कार से उतरकर सीधा कुटिया में भागा । उसने अपनी पत्नी को गद्दा बिछाने के लिए कहा और स्वयं स्वामी के सत्कार करने के लिए बाहर भागा ।

स्वामी आये और उसके गद्दे पर बैठ गये । मोची को अहसास हुआ कि उसके घर में ऐसा कुछ भी नहीं था जो वह भगवान को भेंट कर सके । इसी असमंजस में अपनी असमर्थता की पीड़ा वश वह अपने हाथों को मसोस रहा था ।

उसको परेशान देखकर स्वामी ने कहा कि चिन्ता की कोई बात नहीं है । वह उसे कुछ देने ही आये हैं, न कि लेने । उन्हें तो केवल उसका प्रेम ही चाहिए । स्वामी ने हाथ घुमाकर कुछ मिठाईयां और फल सृजित किये ओर वहाँ उपस्थित सभी लोगों को बांट दिये । तत्पश्चात् उन्होंने विभूति सृजित की और मोची के माथे पर लगा दी ।

जाने से पूर्व स्वामी ने कहा, "अब मुझे चलना होगा, चिन्ता मत करो । मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ ।" इससे पहले कि मोची कुछ बोल पाता, स्वामी कार में बैठकर चले गये । स्वामी ने एक साधारण से मोची की कुटिया को मन्दिर में बदल दिया था ।

एक बार स्वामी त्रिचिनापल्ली गये वहाँ कुछ लोगों ने स्वामी के खिलाफ कुछ झूठी अफवाएं फैलाना शुरू कर दिया । उसी शाम स्वामी जब एक सभा को संबोधित कर रहे थे, उन्होंने एक भिखारी लड़के को मंच पर बुलाया । वह लड़का जन्म से ही गूंगा था और वह बोल नहीं सकता था, यह बात सर्वविदित थी । स्वामी ने सम्पूर्ण भीड़ के समक्ष उसका नाम पूछा । लड़का, जो आज तक कभी नहीं बोला था, ऊँचे स्वर में बोला, "वैंकटनारायण"। अब जिन्होंने स्वामी के विषय में झूठी अफवाएं उड़ाई थी, उनके सिर शर्म से झुक गये । स्वामी की महिमा अपरम्पार है ।

एक बार तिरूवन्नामलाई में स्वामी ने कुछ औषधियाँ सृजित कीं और स्वामी अमृतानन्द को उनकी एक पुरानी बीमारी से मुक्ति दिलाई । एक अन्य अवसर पर स्वामी ने डाक्टर भगवन्तम के पुत्र का ऑपरेशन (शल्य-चिकित्सा) किया । इस शल्य-चिकित्सा के लिए यन्त्र भी स्वामी ने स्वयं ही सृजित किये जो कि आज भी डा. भगवन्तम के पास सुरक्षित रखे हुए हैं ।

स्वामी के एक अन्य भक्त हैं, डाक्टर शंकर । स्वामी ने डा. शंकर के भौतिक शरीर में प्रवेश होकर कई कठिन शल्य-चिकित्साएं बड़ी सफलतापूर्वक की हैं ।

श्री कारूण्यानन्द स्वामी का आन्ध्रप्रदेश में एक आश्रम था । उन्होंने आश्रम के अस्पताल में स्वामी की कुछ फोटो लगाई हुई थी । एक बार की बात है एक असहाय गर्भवती महिला, जिसकी सहायता करने वाला कोई नहीं था, सहायतार्थ आश्रम में आई । स्वामी जी ने उसे आश्रम के अस्पताल में भर्ती करा दिया । एक रात उस गर्भवती महिला को अस्पताल में अकेला छोड़कर दाइयां रात्रि का सिनेमा देखने चली गई । उसी रात को बेचारी महिला को भयंकर प्रसव पीड़ा होने लगी । उसकी पीड़ा और असमर्थता को देखकर, स्वामी दीवार पर टंगे चित्र में से निकलकर नीचे उतर आये । उन्होंने उस महिला का उपचार किया तथा उसकी मदद की जिससे वह बच्चे को सुरक्षित जन्म दे सकी । मां साई ने ही उस सद्यः जात शिशु को स्वच्छ किया और सौम्यता से मां के पास लिटा दिया ताकि वह उसे दूध पिला सके ।

जब दाइयां लौटीं तो यह देखकर चकित रह गई कि उनका काम तो किसी और ने ही कर दिया था । जब उन्होंने उस महिला से पूछा तो उसने स्वामी की फोटो की तरफ संकेत करके बताया कि साधु-माता आई थी और उसी ने उसकी मदद की । उसे कहाँ पता था कि जिस साधु-माता की वह बात कर ही थी, वह तो स्वयं भगवान नारायण ही थे ।

श्री सत्य-नारायण भगवान ने पुनः इस धरा पर जन्म लिया है और हम सब की रक्षा कर रहे हैं । वह सदा ही उसकी रक्षा करेंगे जो श्रद्धा और प्रेम से उनपर विश्वास करेगा । हमारा सौभाग्य है कि आज हमें भगवान के दर्शन, स्पर्शन और सम्भाषण प्राप्त करने का सुअवसर मिला है । यह दुर्लभ अवसर हमें हमारे कई पूर्व जन्मों के पुण्यों के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ है ।

स्वामी का स्वभाव ही प्रेम है । वह उनकी रक्षा करते हैं जो भक्ति और धर्म के मार्ग पर चलते हैं । कुछ लोग उन्हें ईश्वर, कुछ उन्हें महा विष्णु, कुछ 'फादर' और कुछ उन्हें अल्लाह कहते हैं ।

उसी तरह से श्री सत्य साई बाबा भी भगवान के भिन्न-भिन्न रूपों को धारण करते हैं । क्योंकि सभी नाम उन्हीं के हैं और सभी रूप भी उन्ही के हैं । वे अपने भक्तों पर कृपा करते हैं और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं । वे कहते हैं कि मानवीय मूल्य ही हमारा जीवन हैं । हमारे जीवन का आधार हैं । सत्य, धर्म, प्रेम और शान्ति के बिना शिक्षा खोखली है । सत्य, धर्म, शान्ति और प्रेम के बिना परोपकार ओर दानशीलता निरर्थक है । सत्य धर्म, शान्ति और प्रेम के बिना वे सारे क्रिया-कलाप, जिन्हें हम पवित्र या पावन मानते हैं, व्यर्थ हैं ।

सत्य, धर्म, शान्ति और प्रेम सरीखे सदैव स्थायी रहने वाले मानवीय मूल्य सनातन धर्म के चार स्थायी स्तम्भ है । सनातन भगवान सदैव हमें ईश्वर का नाम स्मरण करने की याद दिलाते हैं । वे कहते है कि नाम स्मरण को कभी मत छोड़ो । भगवान का नाम ही मुक्ति दिला सकता है ।

जो कोई भी इस पूजा को प्रेम और भक्ति के साथ करता है, भगवान श्री सत्य साई, 'सत्य-नारायण', उसे सुखी और शान्तिपूर्ण जीवन का आशीर्वाद देते हैं और उनके कष्ट और चिन्ताओं को हरते हैं ।

इति श्री सत्य साई सत्य नारायण कथा सम्पूर्ण ।
सर्वत्र मंगलं भवतु । सर्वत्र शान्तिर्भवतु ।
ऊँ श्री सत्य साइने नमः ।।

परमप्रिय भगवान ने दयापूर्वक बृहस्पतिवार, दिनांक 7 फरवरी 2002 को डा. एच. एस. भट् के माध्यम से और पुनः बृहस्पतिवार दिनांक 22 अक्तूबर 2009 को श्री एम. एन. मोहन कुमार के माध्यम से प्रशांति निलयम् में इस कथा को धन्य किया ।

साई गायत्री मन्त्र

ॐ साईश्वराय विद्महे

सत्य देवाय धीमहि

तन्नः सर्वः प्रचोदयात् ।।

हमारा तन और मन आपको अर्पन करते हैं ।

(यह मन्त्र प्रतिदिन पाठ करें ।)

सर्व धर्म प्रार्थना

ऊँ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरूषोत्तम गुरू तू,
सिद्ध बुद्ध तू, स्कन्द विनायक,
सविता पावक तू, सविता पावक तू ।
ब्रह्म मज्द तू, यहोवा शक्ति तू, यिशु पिता प्रभु तू,
रूद्र विष्णू तू, राम कृष्ण तू,
रहीम ताओ तू, रहीम ताओ तू ।
वासुदेव गो विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू,
अद्धितीय तू, अकाल निर्भय, आत्मलिंग शिव तू ।
आत्मलिंग शिव तू, आत्मलिंग शिव तू ।।

हे भगवान! आप ही सत्य हैं, आप ही नारायण हैं–नर के रूप में भगवान हैं । आप पूर्णता के साकार रूप हैं तथा आप ही सर्वश्रेष्ठ गुरू हैं । आप ही जैनियों के सिद्ध पुरूष, बौद्धों के भगवान बुद्ध हैं । आप ही देवताओं के सेनापति कार्तिकेय हैं तथा आप ही गणेश हैं । आप ही प्रत्यक्ष देवता सूर्य भगवान हैं जो समस्त संसार को चेतना प्रदान करते हैं । आप ही अग्निदेवता हैं । आप ही सच्चिदानन्द सृष्टिकर्ता परंब्रह्म हैं । आप ही महान् मज्द हैं (पारसी लोग भगवान को मज्द कहते हैं)। आप दिव्य सृजन शक्ति यहोवा हैं (यहूदी लोग भगवान को यहोवा कहते हैं) । हे भगवान! आप यिशु पिता हैं । आप रूपान्तरकर्ता रूद्र हैं और पालनकर्ता विष्णु हैं, आप ही राम और कृष्ण हैं । आप परम दयालु तथा सदैव दाता रहीम हैं । आप ही चीनी देवता ताओ हैं । आप सबके पालनकर्त्ता, सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक वासुदेव (कृष्ण) हैं । आप ही सच्चिदानन्द (आनन्दमूर्ति) हरि हैं । आप अद्वितीय, अकाल पुरूष हैं तथा आपदाओं में निर्भीक करने वाले हैं । आप कल्याणकारी शिवलिंग का सृजन करनेवाले तथा उस परम निराकार के प्रतीक हैं ।

आरती

ऊँ जय जगदीश हरे, स्वामी सत्य साई हरे ।
भक्तजना संरक्षक (2), पर्ती महेश्वरा ।
ऊँ जय जगदीश हरे ।।

(हे) ब्रह्माण्ड के नायक स्वामी सत्यसाई! आप जो जीवन के सभी प्रकार के दु:खों, बुराईयों तथा आपदाओं को नष्ट करने वाले हैं और जो भक्तजनों के पालक तथा रक्षक हैं आपकी जय हो । स्वामियों के स्वामी, पर्ती के स्वामी । आपकी जय हो ।

शशिवदना श्रीकरा सर्वा प्राणपतेए, स्वामी सर्वा प्राणपतेए ।
आश्रित कल्पलतिका (2), आपद् बान्धवा ।
ऊँ जय जगदीश हरे ।।

हे पूर्ण चन्द्रमा की भांति अति सुन्दर एवं अनुग्रहकर्त्ता तथा सबका मंगल करने वाले साई! आप सब प्राणियों के अन्तर्यामी तथा सब की प्राणशक्ति हैं । आप अपने पूर्ण रूप में भक्तों के लिए एक दिव्य कल्पवृक्ष हैं और विपत्तियों में उनके परम मित्र हैं। हे ब्रह्माण्ड नायक आपकी जय हो ।

माता-पिता गुरू दैवं, मरि अंतयु नीवे,
स्वामी मरि अंतयु नीवे ।
नाद ब्रह्म जगन्नाथा (2), नागेन्द्र शयना ।
ऊँ जय जगदीश हरे ।।

हे साई! आप हमारे माता-पिता, परम सद्गुरू तथा हमारे सब कुछ हैं ।
हे ब्रह्माण्ड के स्वामी! आप बह्मनाद (ओंकार) हैं
तथा शेषनागशय्या पर शयन करने वाले हैं ।

ओंकार रूप ओजस्वि, ओम साई महादेवा, सत्यसाई महादेवा ।
मंगल-आरति अन्दुको (2), मन्दर गिरिधारी ।
ऊँ जय जगदीश हरे ।।

हे तेजोयम स्वामी! हे देवों के देव महादेव साई! आप प्रणव रूप हैं । आप इस मंगल आरती को स्वीकार कीजिए । हे मन्दराचल-पर्वत को धारण करने वाले स्वामी (कच्छप रूप अवतार में भगवान ने समुद्र मन्थन के समय मन्थराचल पर्वत को अपनी पीठ पर उठाए रखा था) आपकी जय हो ।

(अन्त में निम्मलिखित पद्य तीन बार गाइए । ध्यान रहे कि पहली बार की अपेक्षा अगली बार अधिक द्रुत गति से गाएं ।)

नारायण-नारायण ऊँ सत्य,
नारायण नारायण नारायण ऊँ ।
नारायण नारायण ऊँ सत्य (2),
नारायण नारायण ऊँ ।
ओं जय सद्गरू देवा ।।

सर्वोच्च स्वामी सत्य साई नारायण का नाम जो प्रणव रूप है, गाईए ।
सर्वोच्च स्वामी श्री सत्य साई सद्गुरू की जय हो ।

ऊँ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः ।।

समस्त लोका

समस्त लोकाः सुखिनो भवन्तु ।। (3)
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

भगवान से यही प्रार्थना है कि सभी लोकों के सभी प्राणी सुखी हों ।

"जय बोलो भगवान श्री सत्य साई बाबा जी की जय ।"

विभूति-मन्त्र

परमं पवित्रं बाबा विभूतिम्,
परमं विचित्रं लीला विभूतिम् ।
परमार्थ-इष्टार्थ-मोक्ष प्रदानम्,
बाबा-विभूतिम् इदम् आश्रयामि ।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

मैं श्री सत्य साई की उस परम पवित्र विभूति, जो परम विचित्र तथा अद्भुत है तथा जो परम-अभीष्ट मोक्ष को प्रदान करने वाली है, का आश्रय लेता हूँ ।

भगवन! मैं तुमसे क्या माँगू ?

कुछ भी शेष नहीं जो मांगूँ, तुमने तो सब कुछ दिया है ।
मेरी आशाओं से बढ़कर, मेरी इच्छाओं से ज्यादा ।
मैं तो तेरा कृपा पात्र हूँ, यह सब तो है तेरी महिमा ।।
ऐसा तो कुछ भी नहीं है, जिसको अपना मैं कह पाऊँ ।
जिसको अपना मैं कहता हूँ, वह सब भी तो तेरा दिया है ।
मैं तो बस निमित्त मात्र हूँ, यह सब तो है तेरी महिमा ।।
सोच सकूँ मैं तेरी महिमा, इसलिए तो बुद्धि मिली है ।
देख सकूँ मैं तेरी महिमा, इसलिए तो नेत्र मिले हैं
श्रवन कर सकूँ तेरी महिमा, इसलिए तो तो श्रोत्र मिले हैं,
व्यक्त कर सकूं मैं अपने को, इसलिए यह जगत मिला है ।
इतना सुन्दर, इतना विस्तृत, यह सब तो है तेरी महिमा
कुछ भी बनाऊँ कुछ भी मिटाऊँ, इस सब की भी दी है क्षमता ।
सृजन कर सकूँ जो मैं चाहूँ, यह सब भी तो तेरी महिमा ।।
और मुझे अब कुछ न चाहिए, मैं तो मांगूँ केवल इतना ।
अन्दर भी तुम, बाहर भी तुम, सदा सर्वदा साथ ही रहना ।।
तुमको कभी भूल न जाऊँ, न कभी तुम्हें भुलाना चाहूँ ।
अगर भूल से भूल भी जाऊँ, तुम मुझको न कभी भुलाना ।।
इतनी कृपा करो मेरे साई, जीवन के हर पल, हर क्षण में ।
नित-नित होते परिवर्तन में, हर क्षमता, हर संवर्धन में ।
केवल तेरी महिमा देखूँ, बस तेरी ही महिमा गाऊँ ।।

साई राम

Copyright (English) 2002. Prasanthi Jyoti.
Translated into HINDI by Sri Ashok Sharma
Website: http://www.sathyasaikatha.com
Email: prasanthijyoti@gmail.com

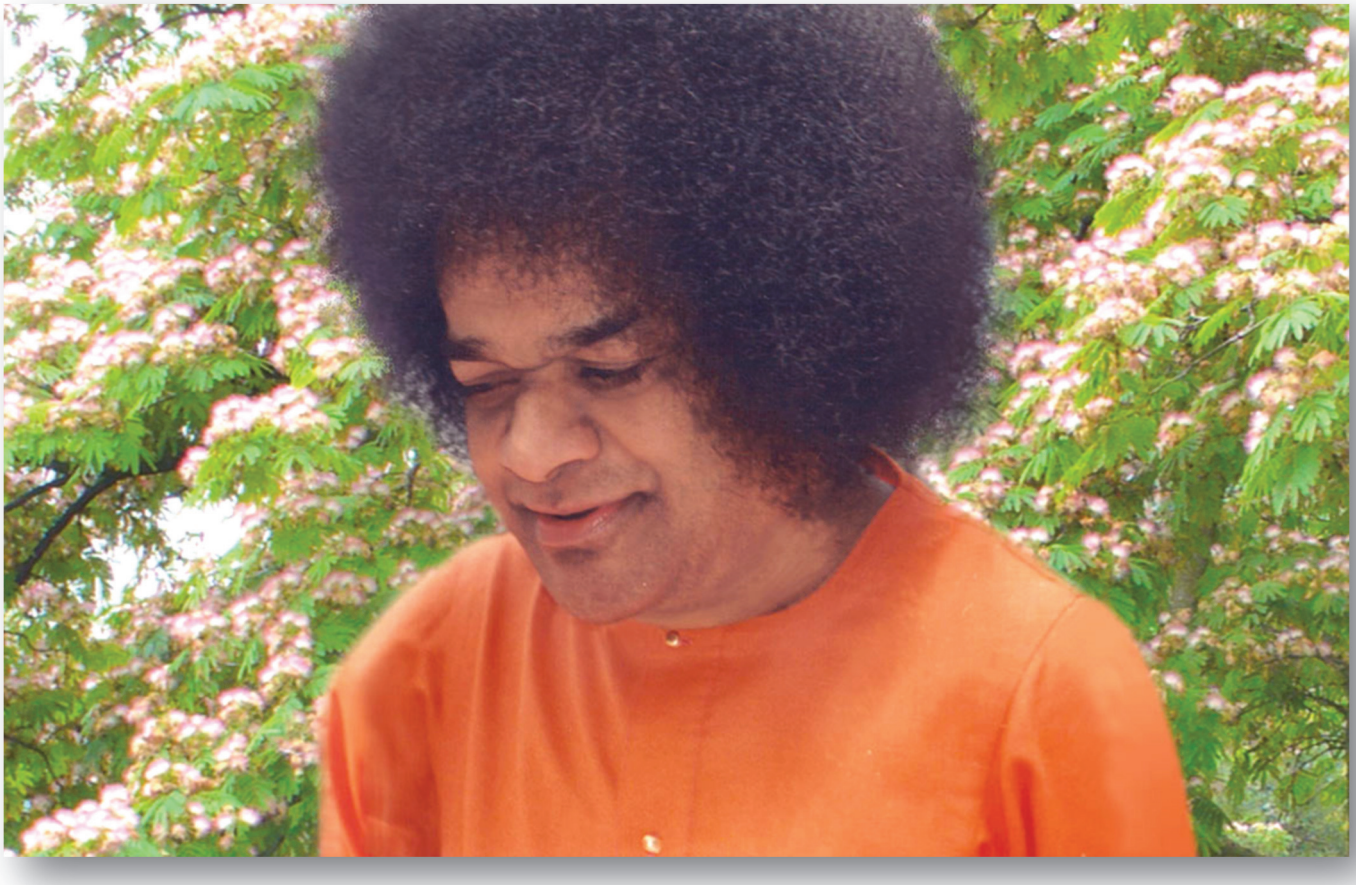

तुम मेरी ओर एक कदम लो
और मैं तुम्हारी ओर
सौ कदम लूँगा